परीक्षा संगीत संस्कार
तबला-पखावज, भाग -1

उद्देश्य :- इस वर्ष हमें विद्यार्थियों पर संगीत के संस्कार एवं उसके प्रति रुचि निर्माण करना है, क्योंकि स्वर और लय संगीत के आधारस्तंभ है |
'स्वर' संगीतरूपी भाषा के अक्षर है और 'लय' संगीतरूपी भाषा का व्याकरण है |

सूचना :- इस वर्ष में लय और ताल में परिचित होना विद्यार्थी से अपेक्षित है | इस वर्ष परीक्षा नहीं होंगी | लेकिन वर्ष के अंत में केवल पाठ्यक्रम पूर्तता के अनुसार स्वयं शिक्षक द्वारा विद्यार्थी का वार्षिक मूल्यमापन श्रेणी के आधार पर होगा | (अ+, अ , ब+, ब)

- **पाठ्यक्रम :-**

1. आसन बैठक – ओंकार का उच्चारण |
2. अपने वाद्य का परिचय |
3. भाषा सीखने के लिये जिस प्रकार हम पहले स्वर और व्यंजन बोलना सीखते है, उसी प्रकार तबला पखावज में वर्णों का उच्चारण एवं वादन | उदा. ना, ता, तीं, गे, क, दीं, धा, धीं |
4. मात्र, सम, आवर्तन का सामान्य ज्ञान |
5. चार, छह, आठ मात्रा के आवर्तनों का लयात्मक ज्ञान |
6. दृक, श्राव्य माध्यम से संगीत की शिक्षा,चित्र के माध्यम से संगीत का परिचय, छोटे छोटे लयबद्ध बोल समूहों का उच्चारण | उदा. तीट, तिरकिट, तीटकता, गदीगन |
7. सांगीतिक श्रवण रूचि निर्माण करने हेतु तथा संगीत में आनंद के लिये आवाज की दुनिया में विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना, विविध ताल वाद्यों का श्रवण |
8. सांगीतिक खेलों के माध्यम से अभ्यास | उदा. गिनती और उसके विविध प्रकार
9. अंको की सहायता से दादरा और कहरवा बोलने का अभ्यास |
10. दादरा और कहरवा बजाने का अभ्यास |

परीक्षा संगीत संस्कार
तबला – पखावज, भाग -2

उद्देश्य :- विद्यार्थी में संगीत के प्रति रुचि और मानसिकता उत्तरोत्तर बढ़ती जाए एवं सरलता से उन्हें संगीत का आनंददायी परिचय हो |

सूचना :- इस वर्ष में लय और ताल का क्रियात्मक संगीत में साधारण प्रयोग विद्यार्थी से अपेक्षित है | इस वर्ष परीक्षा नहीं होंगी | लेकिन वर्ष के अंत में केवल पाठ्यक्रम पूर्तता के अनुसार स्वयं शिक्षक द्वारा विद्यार्थी का वार्षिक मूल्यमापन श्रेणी के आधार पर होगा | (अ+, अ , ब+, ब)

1. उचित आसन
2. बैठक एवं अपने वाद्य पर हाथ का योग्य रखाव |
3. मूल वर्णों का साफ उच्चारण एवं वादन | उदा. ना, ता, तीं, गे, क, दीं, धा, धीं, धुं, न, ट, कत्, घे, घी आदि
4. **लय** - यही वर्ण छोटे छोटे बोल समूह के साथ लयबद्ध बोलने का अभ्यास |
   उदा. तीट, तिरकिट, तीटकता, गदीगन, घेघेतीट घेघेनाना-केकेतीट केकेनाना, पखावज – धागेतीट तागेतीट, तकतक धुमकिट,

5. **ताल** – तीनताल / आदिताल का परिचय एवं बजाना |
6. **मुखाकृति** – वादन करते समय मुख पर किसी प्रकार की विकृति न आए ।
7. संगीत श्रवण – विद्यार्थी के पसंद के गीत या वाद्य वादन सुनाना, सुनतें सुनते उस पर हाथ से ताल देने का अभ्यास |
8. ताल के ठेके बोलना और बजाने का आभ्यास | दादरा, कहरवा, तीनताल/आदिताल
9. दृक श्राव्य के माध्यम से संगीत से परिचय (वाद्यों के चित्र दिखाना, वाद्यों का आवाज सुनाना, चित्रों के माध्यम से संगीत परिचय)
10. सरल छोटे छोटे बोल समूह | उदा. धाधा तीट ताता तीट, धीट तीट तागे तीट, धाधा तिरकिट ताता तिरकिट आदि |
11. विविध ताल वाद्य पह्चानना | उदा. टाळ (मंजीरा), ढोलक, डफ, संबल आदि |
12. कहानी, रंग एवं खेलों के माध्यम से संगीत से परिचय | उदा. जैसे की कृष्णलीला एवं होरी पर आधारित गीतों का, किसी महान व्यक्ति की जीवनी पर आधारित गीत जैसे पोवाडा आदि का श्रवण |
13. राष्ट्रगीत जन-गण-मन एवं राष्ट्रगान वंदे मातरम् सरल गायन |